Gouse Aazam رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه Ka Maqamo Martaba (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 372
Weekly Booklet : 372

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

ग़ौसे आ'ज़म
का मक़ामो मर्तबा

(बयान)

सफ़ह़ात 16

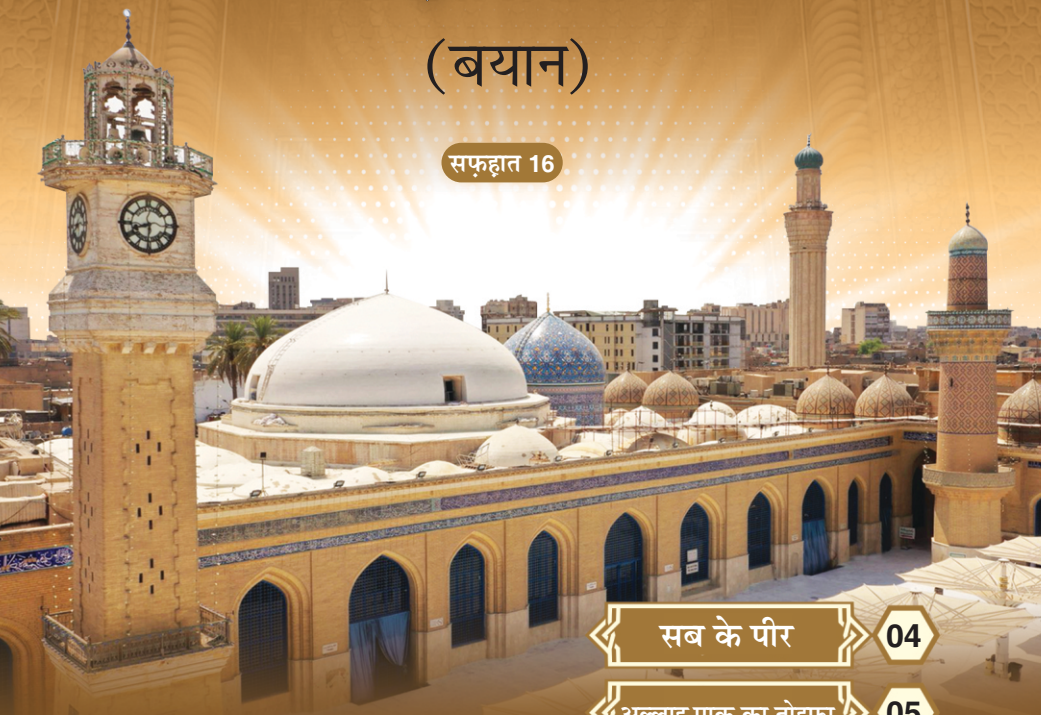

सब के पीर 04
अल्लाह पाक का तोह़फ़ा 05
उन का कैसे अदब न करूं 07
निस्बत की बरकत 12

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**ग़ौसे आ'ज़म** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **का मक़ामो मर्तबा**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद–1, गुजरात।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡم ط بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم ط

ग़ौसे आ'ज़म رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ का मक़ामो मर्तबा[1]

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 15 सफ़्हात का रिसाला : **''ग़ौसे आ'ज़म رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ का मक़ामो मर्तबा''** पढ़ या सुन ले उसे बरोज़े क़ियामत ग़ुलामाने ग़ौसुल आ'ज़म رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ में उठा और उस की मां बाप समेत बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِین بجاہِ خَاتَمِ النّبیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** ''तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूं कि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।'' (جامع صغیر، ص280، حدیث:4580)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیۡہِ السَّلَام से मुलाक़ात

मन्क़ूल है : इमाम जमालुल मिल्लति वद्दीन अबू मुह़म्मद बिन अ़ब्द बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ से सुवाल हुवा कि ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیۡہِ السَّلَام ज़िन्दा हैं या इन्तिक़ाल फ़रमा चुके हैं ? इर्शाद फ़रमाया : मैं ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیۡہِ السَّلَام से मिला हूं और मैं ने उन की ख़िदमत में एक सुवाल अ़र्ज़ किया कि मुझे ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ के बारे में बताइये तो ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَیۡہِ السَّلَام ने फ़रमाया : वोह आज तमाम प्यारों में बे मिसाल और तमाम औलिया के क़ुत़्ब

1 ... अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ के रबीउ़ल आख़िर 1444 हिजरी मुत़ाबिक़ 2022 को मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में ग्यारहवीं शरीफ़ के मदनी मुज़ाकरों से क़ब्ल होने वाले एक बयान का तह़रीरी गुलदस्ता (कुछ तरमीम के साथ)।

हैं। **अल्लाह** पाक ने किसी वली को किसी मक़ाम तक न पहुंचाया जिस से आ'ला मक़ाम शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर को न दिया हो, न किसी वली को अपनी मह़ब्बत का जाम पिलाया जिस से ख़ुश गवार तर जाम शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ने न पिया हो, न किसी मुक़र्रब को कोई फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई मगर येह कि शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर उस से बढ़ कर न हों। **अल्लाह** पाक ने उन में अपना वोह राज़ रखा है जिस से वोह सारे औलिया से बढ़ गए, **अल्लाह** पाक ने जितनों को विलायत दी और जितनों को क़ियामत तक देगा सब शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर के हुज़ूर अदब करते हैं। (بہجۃ الاسرار، ص326،325)

है क़ौले ख़िज़्र येह कि सब औलिया में नहीं तेरा कोई बदल ग़ौसे आ'ज़म
है दिल को तेरी जुस्त्जू ग़ौसे आ'ज़म ज़बां पर तेरी गुफ़्त्गू ग़ौसे आ'ज़म

(क़बालए बख़्शिश, स. 173, 170)

हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सच्चे ग़ुलाम, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से बेह़द अ़क़ीदतो मह़ब्बत रखते थे, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने "फ़तावा रज़विय्या" में कई मक़ामात पर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर फ़रमाया है नीज़ हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की शान में कई अश्आ़र भी लिखे हैं और आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की शाइरी ऐ़न क़ुरआनो ह़दीस और बुज़ुर्गों के अक़्वाल के मुत़ाबिक़ है, चुनान्चे आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه "ह़दाइक़े बख़्शिश" में लिखते हैं :

जो वली क़ब्ल थे या बा'द हुए या होंगे सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 23)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दो दरजे बढ़ गए

मज़ीद पढ़िये : कैसे बड़े बड़े औलियाए किराम मेरे मुर्शिद शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का अदब करते हैं और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से महब्बत का इज़्हार फ़रमाते हैं चुनान्चे सय्यिदी व मुर्शिदी ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर के ख़लीफ़ा ह़ज़रते शैख़ अ़ली बिन हैती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं सरकारे बग़दाद हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ ह़ज़रते शैख़ मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ार पर गया, ह़ज़रते शैख़ मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बहुत बड़े औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم में से हैं। ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उन को यूं सलाम किया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَيْخُ مَعْرُوْفٌ! عَبَرْنَاكَ بِدَرَجَتَيْنِ या'नी "ऐ शैख़ मा'रूफ़! आप पर सलामती हो, हम आप से दो दरजे बढ़ गए हैं।" उन्हों ने मज़ार शरीफ़ से जवाब दिया : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا سَيِّدَ اَهْلِ زَمَانِهٖ या'नी "और आप पर सलामती हो, ऐ अपने ज़माने वालों के सरदार!" (قلائد الجواہر، ص39)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلّى الله عليه واٰله وسلّم

जिसे ख़ल्क़ कहती है प्यारा ख़ुदा का — उसी का है तू लाडला ग़ौसे आ'ज़म
मशाइख़ जहां आएं बहरे गदाई — वोह है तेरी दौलत सरा ग़ौसे आ'ज़म

(ज़ौक़े ना'त, स. 181, 182)

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 26, सफ़ह़ा 559 पर है : इस में शक नहीं कि हुज़ूर ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मर्तबा बहुत आ'ला व अफ़्ज़ल है। ग़ौस अपने दौर में सारी दुन्या के औलिया का सरदार होता है और हमारे ग़ौसे पाक, इमाम ह़सन अ़स्करी رَضِىَ اللهُ عَنْه के बा'द से इमाम महदी رَضِىَ اللهُ عَنْه

की तशरीफ़ आवरी तक सारी दुन्या के ग़ौस और सब ग़ौसों के ग़ौस और सब औलियाउल्लाह के सरदार हैं और उन सब की गरदन पर इन का क़दमे पाक है। (نزہۃ الخاطر الفاتر، ص19, फ़तावा रज़विय्या, 26/559 मुलख़्ख़सन)

खिला मेरे दिल की कली ग़ौसे आ'ज़म मिटा क़ल्ब की बे कली ग़ौसे आ'ज़म
मेरे चांद मैं सदक़े आ जा इधर भी चमक उठे दिल की गली ग़ौसे आ'ज़म
तेरा मर्तबा आ'ला क्यूं हो न मौला तू है इब्ने मौला अ़ली ग़ौसे आ'ज़म
तू बाग़े अ़ली का है वोह फूल जिस से दिमाग़े जहां बस गया ग़ौसे आ'ज़म
फ़िदा तुम पे हो जाए नूरीये मुज़्तर येह है इस की ख़्वाहिश दिली ग़ौसे आ'ज़म

(सामाने बख़्शिश, स. 116 ता 121)

सब के पीर

मेरे पीरो मुर्शिद शहन्शाहे बग़दाद हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : आदमियों के लिये पीर हैं, "क़ौमे जिन्न" के लिये पीर हैं और मैं सब का पीर हूं। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी वफ़ात शरीफ़ के वक़्त अपने शहज़ादगान से फ़रमाया : मुझ में और तुम में और तमाम मख़्लूक़ाते ज़माना में वोह फ़र्क़ है जो आस्मानो ज़मीन में है। मुझ से किसी को निस्बत न दो और मुझे किसी पर क़ियास न करो। (بہجۃ الاسرار، ص51تا52)

ने'मत का चरचा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस त़रह़ के अक़्वाल जिन में ग़ौसे पाक ने अपने मुबारक लब से अपनी ता'रीफ़ की है इस को तह़दीसे ने'मत (या'नी ने'मत का चरचा करना) कहते हैं। जैसा कि क़ुरआने करीम के पारह 30 **सूरतुद्दुह़ा** की आयत नम्बर 11 में इर्शादे रब्बुल आ़लमीन है :

﴿وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿۱۱﴾﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने रब की ने'मत का ख़ूब चरचा करो।

अल्लाह पाक ने मेरे मुर्शिद ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बहुत ख़ूबियां, सलाह़िय्यतें और शानो अ़ज़मत अ़त़ा फ़रमाई है तो इन्हों ने **अल्लाह** पाक की ने'मत का चरचा करते हुए इस त़रह़ के इर्शादात फ़रमाए हैं और इस में लोगों को ख़बरदार भी किया है कि मेरे बारे में ज़बान मत खोलना, मुझ पर तन्क़ीद की या मेरी मुख़ालफ़त की तो कहीं के न रहोगे।

बाज़े अश्हब की ग़ुलामी से येह आंखें फिरनी देख उड़ जाएगा ईमान का त़ोता तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 29)

या'नी ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के तअ़ल्लुक़ से कोई ना मुनासिब बात की या आंखें फिराईं तो ईमान निकल जाएगा जैसा कि ह़दीसे क़ुदसी है, **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : जो मेरे किसी वली से दुश्मनी करता है मैं उस से ए'लाने जंग करता हूं। (بخاری، 4/248، حدیث:6502)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में भी हमें येह समझाया गया है कि ख़बरदार ! **अल्लाह** पाक के वली की तौहीन नहीं करनी है।

अल्लाह पाक का तोह़फ़ा

शैख़ अबुल ह़सन अ़ली बिन सिन्जारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर दुन्या के सरदारों में से एक हैं और आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه **अल्लाह** पाक के तह़ाइफ़ में से मख़्लूक़ के लिये (तोह़फ़ा) हैं। (بہجۃ الاسرار، ص431، 432)

बग़दाद के मुसाफ़िर को पैग़ाम

एक दिन ह़ज़रते सय्यिद इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه

अपने भान्जों और मुरीदों को वसिय्यत फ़रमा रहे थे कि एक शख़्स बग़दाद शरीफ़ जाने के इरादे से उन के पास रुख़्सत होने आया, आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने उस से फ़रमाया : जब बग़दाद पहुंचो तो शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ अगर दुन्या में तशरीफ़ फ़रमा हों तो उन की ज़ियारत और वफ़ात शरीफ़ पा चुके हों तो उन के मज़ारे मुबारक की ज़ियारत से पहले कोई काम न करना। ह़ज़रते शैख़ अबू मस्ऊ़द अह़मद बिन अबी बक्र ह़रीमी और ह़ज़रते अबू अ़म्र उ़स्मान सरीफ़ीनी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِمَا ने फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम! **अल्लाह** ने औलिया में शैख़ मुह़्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का मिस्ल न पैदा किया न कभी पैदा करेगा।" (بہجۃ الاسرار، ص56)

ब क़सम कहते हैं शाहाने सरीफ़ीनो ह़रीम कि हुवा है न वली हो कोई हम्ता तेरा

मक़ामो मर्तबए ग़ौसे पाक

ह़ज़रते शैख़ अबू अ़म्र उ़स्मान बिन मरज़ूक़ क़रशी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ हमारे शैख़, इमाम और सय्यिद (या'नी सरदार) हैं और उन सब के सरदार हैं जो कि इस ज़माने में **अल्लाह** पाक के रास्ते पर चलते हैं और **अल्लाह** पाक के सामने खड़े होने में सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ हमारे इमाम हैं, इस ज़माने के औलिया और तमाम बड़े दरजे वालों से इस बात का सख़्ती से अ़ह्द लिया गया कि "ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की बात की त़रफ़ रुजूअ़ करें और उन के मक़ाम का अदब करें।" (بہجۃ الاسرار، ص332،333)

न क्यूंकर सल्त़नत दोनों जहां की उन को ह़ासिल हो
सरों पर अपने लेते हैं जो तल्वा ग़ौसे आ'ज़म का

(क़बालए बख़्शिश, स. 96)

बह्र (या'नी समुन्दर) को छोड़ कर नह्र की त़रफ़ नहीं जाते

शैख़ अबुल क़ासिम उ़मर बिन मस्ऊ़द बज़्ज़ार رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मेरे सरदार शैख़ मुह़युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ शैख़ अ़दी बिन मुसाफ़िर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की बहुत ता'रीफ़ किया करते थे, मुझे उन की ज़ियारत का शौक़ हुवा और मैं ने हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ से उन की ज़ियारत की इजाज़त मांगी जो आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने अ़त़ा फ़रमा दी। मैं सफ़र कर के उन तक पहुंचा तो उन को अपने हुजरे के दरवाज़े पर खड़ा पाया। उन्हों ने मुझे देख कर इर्शाद फ़रमाया : ऐ उ़मर ! ख़ुश आमदीद, तू समुन्दर को छोड़ कर नह्र की त़रफ़ आया है। ऐ उ़मर ! शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ इस ज़माने के तमाम औलिया की लगामों के वाली हैं। (بہجۃ الاسرار، ص289)

मैं जहन्नम में न अब जाऊंगा اِنۡ شَآءَ اللّٰہ रहनुमा तुम को जो मैं ने है बनाया या ग़ौस
शाहे बग़दाद ! हो अ़त्तार पे नज़रे रह़मत ख़ाली कासा लिये है दूर से आया या ग़ौस

(वसाइले बख़्शिश, स. 541)

उन का कैसे अदब न करूं

शैख़ मूसा बिन माहीन अज़्ज़ूली رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ हमारे ज़माने में लोगों से बेहतर हैं और हमारे वक़्त में सुल्त़ानुल औलिया (या'नी वलियों के सरदार) और सय्यिदुल आ़रिफ़ीन (**अल्लाह** पाक की पहचान रखने वालों के सरदार) हैं, मैं ऐसे शख़्स का अदब कैसे न करूं जिस का अदब आस्मान के फ़िरिश्ते भी करते हैं। (بہجۃ الاسرار، ص435)

सिल्सिलए सोह्रवर्दिया के बानी ह़ज़रते शैख़ शहाबुद्दीन अबू ह़फ़्स उ़मर सोह्रवर्दी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं अपने चचा और शैख़ अबू नजीब अ़ब्दुल क़ाहिर सोह्रवर्दी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के साथ हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की

ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। मेरे चचा ने आप رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه का बड़ा अदब किया और ख़ामोश बैठे रहे। जब वापस लौटे तो मैं ने उन से इस वक़्त ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه के साथ अदब करने के बारे में पूछा तो मेरे चचा ने फ़रमाया : मैं उन का कैसे अदब न करूं ह़ालां कि उन की ज़ात कामिलो अक्मल है। सारी दुन्या में उन का तसर्रुफ़ (या'नी इख़्तियार) है। (بہجۃ الاسرار، ص438)

पहली ज़ियारत काफ़ी न थी

ह़ज़रते ख़िज़्र मौसिली رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक दिन मैं बारगाहे ग़ौसिय्यत رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه में ह़ाज़िर था। मेरे दिल में ख़याल आया कि शैख़ अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه की ज़ियारत करूं, पीरों के पीर, रोशन ज़मीर शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : क्या शैख़ अह़मद को देखना चाहते हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां ! हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه ने थोड़ी देर सरे मुबारक झुकाया फिर मुझ से फ़रमाया : ऐ ख़िज़्र ! लो येह हैं शैख़ अह़मद। अब जो मैं ने देखा तो अपने आप को ह़ज़रते शैख़ अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه के पहलू में मौजूद पाया और मैं ने उन को देखा कि रो'बदार शख़्स हैं, मैं खड़ा हुवा और उन्हें सलाम किया। इस पर ह़ज़रते रफ़ाई رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : ऐ ख़िज़्र ! वोह जो शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर को देखे जो तमाम औलिया के सरदार हैं वोह मेरे देखने की तमन्ना (क्यूं करता है) ? मैं तो उन्हीं की रइय्यत (या'नी मा तह़्तों) में से हूं, येह फ़रमा कर मेरी नज़र से ग़ाइब हो गए फिर हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه के इन्तिक़ाल शरीफ़ के बा'द बग़दादे मुअ़ल्ला से ह़ज़रते अह़मद रफ़ाई رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه की ज़ियारत को गया। उन्हें देखा तो वोही शैख़ थे जिन को मैं ने

उस दिन हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के पहलू में देखा था। हज़रते शैख़ अहमद रफ़ाई رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : ऐ ख़िज़्र ! क्या पहली (ज़ियारत) तुम्हें काफ़ी न थी ? (फ़तावा रज़विय्या, 28/388)

ग़र्ज़ आक़ा से करूं अ़र्ज़ कि तेरी है पनाह बन्दा मजबूर है ख़ातिर पे है क़ब्ज़ा तेरा
धूप महशर की वोह जांसोज़ क़ियामत है मगर मुत्मइन हूं कि मेरे सर पे है पल्ला तेरा

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 30, 31)

अश्आ़रे अ़क़ीदत

हज़रते शैख़ बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ से अपनी अ़क़ीदत का इज़्हार कुछ यूं फ़रमाते हैं :

सगे दरगाहे जीलानी बहाउद्दीन मुल्तानी लिक़ाए दीने सुल्तानी मुहिय्युद्दीन जीलानी

आ'ला हज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ से अपनी अ़क़ीदत का यूं इज़्हार फ़रमाते हैं :

येह चिश्ती नक़्शबन्दी सोहरवर्दी हर इक तेरी त़रफ़ माइल है या ग़ौस
मज़रए़ चिश्तो बुख़ारा व इराक़ो अजमेर कौन सी किश्त पे बरसा नहीं झाला तेरा
किस गुलिस्तां को नहीं फ़स्ले बहारी से नियाज़ कौन से सिल्सिले में फ़ैज़ न आया तेरा

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 259, 25, 26)

ख़लीफ़ए आ'ला हज़रत, शेरे बेशए अहले सुन्नत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना हश्मत अ़ली ख़ान उ़बैदे रज़वी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ से अपनी महब्बत का इज़्हार कुछ यूं करते हैं :

सग हूं मैं उ़बैदे रज़वी ग़ौसो रज़ा का भागते हैं मेरे आगे शेरे बबर भी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

वाह ! क्या बात मेरे ग़ौसे आ'ज़म رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की

ह़ज़रते मिरज़ा मज़्हर जाने जानां رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में एक बड़ा सा चबूतरा देखा जिस में बहुत से औलिया ह़ल्क़ा बांध कर मुराक़बे में (या'नी सब चीज़ों को छोड़ कर **अल्लाह** पाक के ख़याल में डूबे हुए) हैं, उन के दरमियान सिल्सिलए नक़्शबन्दिया के पेश्वा ह़ज़रत ख़्वाजा मुह़म्मद बहाउद्दीन नक़्शबन्द رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ दो ज़ानू और ह़ज़रते जुनैद رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ तक्या लगाए तशरीफ़ फ़रमा हैं, अचानक येह बुज़ुर्ग खड़े हो कर चल पड़े, मैं ने (किसी से) पूछा कि येह क्या मुआ़मला है ? तो बताया गया कि येह सब मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ के इस्तिक़्बाल के लिये जा रहे हैं, फिर ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ तशरीफ़ लाए तो एक बुज़ुर्ग ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ के हाथ को निहायत एह़तिराम के साथ अपने मुबारक हाथों में लिया हुवा था, पूछने पर पता चला कि येह ख़ैरुत्ताबिईन ह़ज़रते उवैस क़रनी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ हैं, फिर एक हुजरा शरीफ़ जो निहायत साफ़ और पुरनूर था ज़ाहिर हुवा और येह तमाम बुज़ुर्ग उस में दाख़िल हो गए, मैं ने इस की वज्ह पूछी तो जवाब मिला : "आज हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का उ़र्स शरीफ़ है और येह बुज़ुर्ग इस में शामिल होने के लिये तशरीफ़ लाए हैं।" (कलिमाते त़य्यिबात फ़ारसी, स. 77)

हम को "ग्यारह" का है अ़दद प्यारा उन की तारीख़े उ़र्स है ग्यारह
यूं अ़दद हम को प्यारा ग्यारा है वाह क्या बात ग़ौसे आ'ज़म की

(वसाइले बख़्शिश, स. 579)

क़ादिरिय्यों को मुबारक

सरकारे बग़दाद हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के दीवानों और मुरीदों

को मुबारक हो कि सरकारे बग़दाद رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के फ़रमान के मुताबिक़ "उन का मुरीद चाहे कितना ही गुनहगार हो वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक तौबा न कर ले।" (بہجۃ الاسرار، ص191)

ईमान उस का बच गया शैतान से, जो तेरे है "सिल्सिले" में आ गया बग़दाद वाले मुर्शिद

(वसाइले बख़्शिश, स. 546)

ऐ आशिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! जो ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का ग़ुलाम बन जाता है उस के तो वारे ही न्यारे हो जाते हैं चुनान्चे "बह्जतुल असरार" में है : पीरों के पीर, पीर दस्त गीर, रोशन ज़मीर, क़ुत्बे रब्बानी, महबूबे सुब्हानी, पीरे लासानी, क़िन्दीले नूरानी, शहबाज़े ला मकानी अश्शैख़ अबू मुहम्मद सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का फ़रमाने बिशारत निशान है : मुझे एक बहुत बड़ा रजिस्टर दिया गया जिस में मेरे साथियों और मेरे क़ियामत तक होने वाले मुरीदों के नाम लिखे थे और कहा गया कि येह सारे अफ़राद तुम्हारे ह़वाले कर दिये गए हैं। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने जहन्नम पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते से पूछा : क्या जहन्नम में मेरा कोई मुरीद भी है ? उन्हों ने जवाब दिया : नहीं। (بہجۃ الاسرار، ص193)

कह कर के "ला तख़फ़" हमें बे ख़ौफ़ कर दिया उस रह़मते ख़ुदा को हमारा सलाम हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 620)

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने मज़ीद फ़रमाया : मुझे अपने परवर्दगार की इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मेरा ह़िमायत का हाथ मेरे मुरीद पर इस त़रह़ है जिस त़रह़ आस्मान ज़मीन पर साया किये हुए है। अगर मेरा मुरीद अच्छा न भी हो तो क्या हुवा ! اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ ! मैं तो अच्छा हूं। मुझे अपने पालने वाले

की इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं उस वक़्त तक अपने रब्बे करीम की बारगाह से न हटूंगा जब तक अपने एक एक मुरीद को दाख़िले जन्नत न करवा लूं। (بہجۃ الاسرار، ص193)

क़ादिरी कर क़ादिरी रख क़ादिरिय्यों में उठा क़ब्रे अ़ब्दुल क़ादिरे क़ुदरत नुमा के वासिते

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 149)

निस्बत की बरकत

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जिस ने मुझे देखा या मेरे देखने वाले को देखा या मेरे देखने वाले के देखने वाले को देखा। मैं उस शख़्स पर ह़सरत करता हूं जिस ने मुझे नहीं देखा।

(بہجۃ الاسرار، ص53)

सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने मुझ से वा'दा फ़रमाया है कि मेरे मुरीदों और मेरे दोस्तों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। जो शख़्स मेरी त़रफ़ मन्सूब हो और मेरा नाम ले, **अल्लाह** पाक उस को क़बूल करेगा और उस पर मेह्रबानी फ़रमाएगा, अगर्चे वोह बुरे अ़मल पर हो, वोह मेरे मुरीदों में से है। मैं ने मुन्कर नकीर से इस बात का अ़ह्द लिया है कि वोह क़ब्र में मेरे मुरीदों को नहीं डराएंगे।

(بہجۃ الاسرار، ص193 ملخصًا)

مُریدی لَا تَخَف कह कर तसल्ली दी ग़ुलामों को क़ियामत तक रहे बे ख़ौफ़ बन्दा ग़ौसे आ'ज़म का
निदा देगा मुनादी ह़श्र में यूं क़ादिरिय्यों को किधर हैं क़ादिरी कर लें नज़ारा ग़ौसे आ'ज़म का
फ़िरिश्तो रोकते क्यूं हो मुझे जन्नत में जाने से येह देखो हाथ में दामन है किस का ग़ौसे आ'ज़म का
सदाए सूर सुन कर क़ब्र से उठते ही पूछूंगा कि बतलाओ किधर है आस्ताना ग़ौसे आ'ज़म का

अ़ज़ीज़ो कर चुको तय्यार जब मेरे जनाज़े को तो लिख देना कफ़न पर नामे वाला ग़ौसे आ'ज़म का

जमीले क़ादिरी सो जां से हो क़ुरबान मुर्शिद पर बनाया जिस ने मुझ जैसे को बन्दा ग़ौसे आ'ज़म का

(क़बालए बख़्शिश, स. 93 ता 101)

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जन्नत की ने'मतों का कोई अन्दाज़ा नहीं लगा सकता कि **अल्लाह** पाक ने अपने बन्दों की आंखों की ठन्डक के लिये क्या कुछ तय्यार कर रखा है। (ग़ौसे पाक के हालात, स. 77)

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

गदा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेकों की दा'वत का ख़ुदा दिन ख़ैर से लाए सख़ी के घर ज़ियाफ़त का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 37)

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! ग्यारहवीं वाले मुर्शिद की सीरत भी अपनाने की कोशिश फ़रमाइये, आइये ! फ़रमाने ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه सुनिये : **अल्लाह** पाक हमें इन के मुत़ाबिक़ अपने शबो रोज़ (या'नी दिन रात) गुज़ारने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

फ़रमाने ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه : "**अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी नहीं करनी चाहिये और सच्चाई का दामन हाथ से नहीं छोड़ना चाहिये।"

(فتوح الغیب مع قلائد الجواہر، ص44 ملخصاً)

ग़ौसे पाक के दीवानो ! निय्यत कर लीजिये कि आज के बा'द कोई गुनाह नहीं करेंगे, اِنْ شَآءَاللهُ नमाज़ें क़ज़ा नहीं करेंगे, اِنْ شَآءَاللهُ बिला इजाज़ते शर्ई जमाअ़त भी नहीं छोड़ेंगे, اِنْ شَآءَاللهُ फ़र्ज़ रोज़े नहीं छोड़ेंगे, ज़कात पूरी अदा करेंगे, ह़ज फ़र्ज़ हो गया तो अदाएगी में देर नहीं करेंगे, झूट नहीं बोलेंगे, दाढ़ी नहीं मुंडाएंगे और एक मुठ्ठी से नहीं घटाएंगे, फ़िल्में ड्रामे,

गाने बाजे नहीं देखें, सुनेंगे, बे पर्दा औ़रतों को नहीं देखेंगे, सूद नहीं खाएंगे, रिश्वत का लेनदेन नहीं करेंगे, शराब के क़रीब भी नहीं जाएंगे, मां बाप की ना फ़रमानी नहीं करेंगे क्यूं कि येह सब बातें **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी हैं जैसा कि अभी आप ने ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ का फ़रमान सुना कि **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी नहीं करनी चाहिये ।

ऐ आ़शिक़ाने ग़ौसे आ'ज़म ! जब **अल्लाह** पाक की रह़मत से गुनाहों से बचेंगे, ख़ूब नेकियां करेंगे, नेक आ'माल का रिसाला पुर करेंगे, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करेंगे, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत इख़्तियार करेंगे, **अल्लाह** व रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा ह़ासिल हो गई तो ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ के पीछे पीछे जन्नत में जाएंगे । اِنۡ شَآءَاللّٰہ

सजाएं इमामा बढ़ाएं जो दाढ़ी उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म
जो हैं वक़्फ़, सुन्नत की ख़िदमत की ख़ातिर उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म
जो रोज़ाना देते हैं नेकी की दा'वत उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म
सफ़र क़ाफ़िले में जो करते हैं हर माह उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म
जो दें राहे मौला में बारह महीने उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म
है अ़त्तार को सल्बे ईमां का धड़का बचा इस का ईमां बचा ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश, स. 550, 551)

ख़्वाब में ज़ियारते ग़ौसे पाक का ग़ौसिय्या नुस्ख़ा

''मदनी पन्जसूरह'' सफ़ह़ा 303 पर है : क़सीदए ग़ौसिय्या (फ़्रेम करवा कर) जो कोई अपने सामने रखे (ताकि नज़र पड़ती रहे) और तीन

मरतबा पढ़े, मक़्बूले बारगाहे ग़ौसिय्यत मआब होगा और हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की ज़ियारत से मुशर्रफ़ होगा, اِنۡ شَآءَ اللّٰہُ الۡکَرِیۡم ।

बेदार बख़्त वोह है हक़ीक़त में जिस को जल्वा तू ख़्वाब में दिखा गया बग़दाद वाले मुर्शिद

(वसाइले बख़्शिश, स. 546)

मेरा पीर मेरा पीर ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर आप हैं पीरों के पीर ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर
महबूबे रब्बे क़दीर ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर आप वलियों के अमीर ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर
बे मिसालो बे नज़ीर ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर बख़्शवा दो मेरे पीर ग़ौसे आ'ज़म दस्त गीर

(वसाइले फ़िरदौस, स. 60, 61)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

अगले ह़फ़्ते का रिसाला

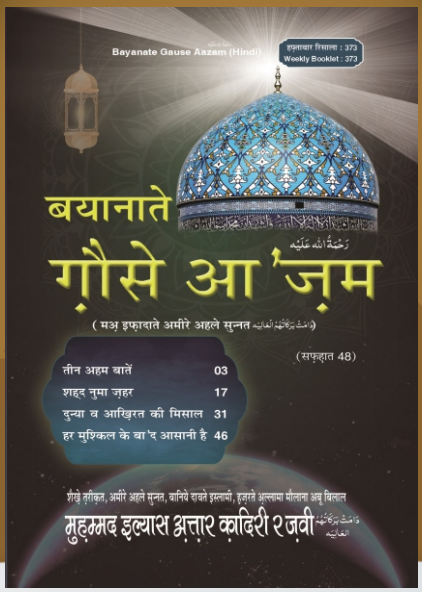

Bayanate Gause Aazam (Hindi)
हफ़्तावार रिसाला : 373
Weekly Booklet : 373
बयानाते
गौसे आ'ज़म
رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه
(मअ़ इफ़ादाते अमीरे अहले सुन्नत)
(सफ़हात 48)
तीन अहम बातें 03
शहद नुमा ज़हर 17
दुन्या व आख़िरत की मिसाल 31
हर मुश्किल के बा'द आसानी है 46
शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी